अनाथ

❑ अजंता देव

धीरे धीरे सरक जाती है रेल
छूटते जाते हैं ठेले और खोमचे
अचानक रोने लगता है लैम्प पोस्ट के नीचे खड़ा
अकेला बच्चा

अकेले बच्चे की ओर सबसे पहले बढ़ते हैं
दलाल- जेबकतरे - गुण्डे
तब कहीं प्रकट होती है पुलिस
वह थामती है हाथ
चन्द सवालों और
अखबारों में छपे फोटो के बाद
बच्चा तय हो जाता है अनाथ

तय हो जाती है उसकी जिन्दगी
तय हो जाता है उसका रोजगार
गिन ली जाती हैं उसकी रोटियां
निश्चित हो जाता है उसका मासिक खर्च
जिसका चालीस प्रतिशत देगा प्रशासन
शेष कुछ दानवीर

रातों को चौंकता है बच्चा
करता है महीनों तक बिस्तर गीला
डांट पड़ने पर झेलने की ताकत
आएगी बरसों में

फिलहाल सीखना है आंसू रोकना
सीखना है खुद को अनाथ समझना
सीखना है दस बरस की उम्र में जी हां बोलना
उसे कुछ भूलना भी है
भाई- बहन और मचलना
भूल चुका है दो महीनों में
अब भूल रहा है बोलना
बच्चा ढल रहा है धीरे-धीरे

जैसे ढलती है रात अपराध में
जैसे ढलता है लोहा हथियार में

बच्चा इस बीच क्या सोचता होगा
क्या यह कि
ट्रेन न बनी होती
क्या यह कि
वह उतरा न होता प्लेटफार्म पर
या कि
वह बच्चा न होता

अकेले बच्चे को चुप देखकर
खुश होते हैं बड़े

बच्चा एक टक देखता है
बाहर लगे लैम्प पोस्ट को
जिसके नीचे खड़ा है
एक और अकेला रोता हुआ बच्चा ◆